

BLOCK 4

UNIT 1

Individual differences methods of study and inclusive education

Dr. Kranti Verma

Asst. Prof.

Victoria College of Education,

Bhopal

M. N. 9981865910

Krantiv5@gmail.com

इकाई 1 व्यक्तिगत भिन्नता के अध्ययन की विधियाँ

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 व्यक्तिगत भिन्नता के अध्ययन की विधियाँ

1.3.1 अवलोकन

1.3.2 केस अध्ययन विधि

1.3.3 साक्षात्कार तकनीकी

1.4 किशोरों द्वारा आत्मनिरीक्षण

1.5 सारांश

1.6 चिंतन के लिए प्रश्न

1.7 प्रगति की जांच के लिए उत्तर

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा के क्षेत्र में एक ही अध्यापक द्वारा निश्चित पाठ्यक्रम की शिक्षा छात्रों को समान रूप से दी जाती है, फिर भी छात्रों की उपलब्धियों में अंतर आता है, ऐसा क्यों? इसका पता लगाया शिक्षा मनोविज्ञान ने। उसने बालकों में शारीरिक, मानिसक, भावात्मक और अन्य विभिन्न प्रकार के अन्तरों को स्पष्ट किया है। इन्हीं अन्तरों तथा वैयक्तिक भेदों के कारण छात्रों की उपलब्धियों में भी अन्तर स्पष्ट होता है।

प्रत्येक प्राणी अपने जन्म से ही विशेष शक्तियों को लेकर जन्म लेता है। ये विशेषताएं उसको माँ एवं पिता के पूर्वजों से हस्तांतरित की गयी होती हैं। इसी के साथ ही पर्यावरण की विशेषताएं छात्र के विकास पर अपना प्रभाव डालती हैं। पर्यावरण छात्रों को सुडोल और सामान्य बनाने में मदद देते हैं, अतः यह स्पष्ट है, कि सभी छात्र एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

जब दो बच्चे विभिन्न समानताएं रखते हुए भी आपस में भिन्न व्यवहार करते हैं तो इसे वैयक्तिक भिन्नता कहा जाता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसे निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है –

स्किनर के अनुसार – आज हमारा यह विचार है, कि व्यक्तिगत भिन्नताओं में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का कोई भी ऐसा पहलू सम्मिलित हो सकता है, जिसका माप किया जा सकता है।

टायलर के अनुसार – शरीर के आकार और स्वरूप, शारीरिक कार्यों, गति सम्बन्धी क्षमताओं, बुद्धि, उपलब्धि ज्ञान, रुचियों, अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों में माप की जा सकने वाली विभिन्नताओं की उपस्थिति सिद्ध की जा चुकी है।

व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर छात्रों को शिक्षा देने की विधियाँ भी अलग अलग होती हैं। व्यक्तिगत भिन्नताओं को मापने की अनेक विधियाँ हैं जैसे अवलोकन, साक्षात्कार आदि।

मनुष्य को अपने जीवन का सूक्ष्म रूप में निरीक्षण करते रहना चाहिए। मनुष्य अपनी असफलताओं का कारण हमेशा दूसरों को बताता है। किन्तु आत्मनिरीक्षण पर ज्ञात होता है, कि असफलताओं का कारण मनुष्य की स्वयं की कमजोरी होती है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जानेगें –

- व्यक्तिगत भिन्नता का अर्थ जान सकेंगें।
- व्यक्तिगत भिन्नता के अध्ययन की विधियाँ समझ सकेंगे।
- बच्चों और किशोरों द्वारा आत्मनिरीक्षण का महत्व समझेंगें।
- व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर छात्रों को वर्गीकृत कर सकेंगें।

1.3 व्यक्तिगत भिन्नता के अध्ययन की विधियाँ

1.3.1 अवलोकन विधि

अवलोकन विधि के अन्तर्गत अवलोकनकर्ता दूसरों की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। गुड तथा हेट (1964) के मतानुसार विज्ञान अवलोकन से प्रारम्भ होता है और अपने तथ्यों की पुष्टि के लिए अन्त में अवलोकन का ही सहारा लेता है। इस कथन से अवलोकन विधि की महत्वपूर्णता स्पष्ट होती है। यंग (1954) ने बताया है, कि

अवलोकन विधि में अध्ययनकर्ता तथ्यों का अध्ययन अपनी आँखों से करता है। मोसर (1958) ने अवलोकन को वैज्ञानिक पूछताछ की सर्वश्रेष्ठ विधि कहा है। इस विवरण से स्पष्ट है, कि अवलोकनकर्ता अपनी आँखों का पूर्ण रूप से उपयोग करके प्रत्यक्ष अवलोकन में भाग लेता है। इस विधि से सामूहिक व्यवहार का अध्ययन कर व्यक्तिगत भिन्नता का मापन सम्भव है।

अवलोकनकर्ता उपयुक्त योजनाबद्ध तरीके से अवलोकन के आधार पर सामग्री एकत्रित करके प्रदत्तों की व्याख्या एवं उनका सामान्यीकरण कर सकता है।

अवलोकन विधि के प्रकार

- सरल तथा अनियन्त्रित अवलोकन विधि – जब किसी घटना का अवलोकन प्राकृतिक परिस्थितियों में किया जाये और उन परिस्थितियों पर कोई दबाव न डाला जाय तो ऐसे अवलोकन को सरल तथा अनियन्त्रित अवलोकन कहते हैं।

अनियन्त्रित अवलोकन को सहभागी, असहभागी तथा अर्ध-सहभागी प्रकारों में बाँटा जा सकता है। सहभागी अवलोकन में अवलोकनकर्ता को उस समूह का लगभग अभिन्न अंग बनना होता है, जिसका अध्ययन किया जाता है। असहभागी अवलोकन में अवलोकनकर्ता को तटस्थ बनकर अवलोकन करना होता है। अर्ध-सहभागी अवलोकनकर्ता को सम्बन्धित समूह के समय न तो कठोरता के साथ आत्मसात् करना होता है और न ही वे तटस्थ रहने का ही प्रयास करता है। ऐसी स्थिति में उसकी भूमिका मध्यमार्गी होती है।

- व्यवस्थित अथवा नियन्त्रित अवलोकन विधि – जब अवलोकनकर्ता स्वयं तथा घटना दोनों पर नियन्त्रण करके अध्ययन करें तो इस प्रकार का अवलोकन व्यवस्थित अथवा नियन्त्रित अवलोकन कहा जा सकता है।

नियन्त्रित अवलोकन एक क्रमबद्ध, व्यवस्थित तथा वस्तुनिष्ठ अध्ययन है। युंग (1956) के अनुसार नियन्त्रित अवलोकन एवं पूर्व निर्धारित योजनाओं के अनुसार सम्पन्न

किया जाता है जिसके अन्तर्गत पर्याप्त प्रायोगिक प्रक्रिया भी सम्मिलित की जा सकती है।

अवलोकन विधि के दोष –

अवलोकन विधि में भी कुछ दोषों की व्याख्या की गयी है जो निम्नलिखित हैं –

■ **पक्षपातपूर्ण अवलोकन**— अवलोकनकर्ता के द्वारा पक्षपात रहित व्यवहार का अवलोकन कर लिया जाए इस बात की सम्भावना बहुत कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति की यह सामान्य प्रकृति होती है कि वह अपने मित्रों, सम्बन्धियों तथा ऐसे व्यक्ति जिनसे कुछ सम्पर्क स्थापित कर लेता है, आदि में दोषों का अवलोकन नहीं करता है। जो उक्त लिखित अवस्थाओं में नहीं आते उनके सामान्य गुण भी दोष के रूप में दिखायी देते हैं। रंग तथा जाति भेद के आधार पर उच्च जाति वाले निम्न जाति वालों को बुद्धि तथा कार्य कुशलता में हीन समझते हैं। इन सब बातों का कारण है अवलोकनकर्ता द्वारा पक्षपातपूर्ण अवलोकन करना। यदि अवलोकनकर्ता पूर्व विचार तथा अन्य भेदों को त्यागकर व्यवहार का अवलोकन करने में निष्पक्ष रूप का परिचय देता है तो अवलोकन से इस कठिनाई को दूर किया जा सकता है।

■ **अप्रशिक्षित अवलोकनकर्ता**— अवलोकन विधि में दूसरा दोष उस समय उत्पन्न होता है जब अवलोकन का कार्य अप्रशिक्षित व्यक्तियों के हाथ में होता है। यह स्पष्ट है कि यदि मनोवैज्ञानिक अप्रशिक्षित अवलोकनकर्ता के अवलोकन में विश्वास करके व्यवहार की व्याख्या अथवा सिद्धान्त प्रतिपादित करता है तो यह उसकी बहुत बड़ी भूल होगी और इस विधि का बहुत बड़ा दोष। इसका अर्थ यह है कि अवलोकनकर्ता को अपने पूर्व विचार तथा भावनाओं को त्यागकर वैज्ञानिक विधि से अवलोकन की प्रक्रिया को प्रयोग में लाना होगा।

■ **अप्राकृतिक व्यवहार** – अवलोकनविधि में पक्षपातपूर्ण अवलोकन तथा प्रशिक्षित अवलोकनकर्ता से ही तथाकथित कठिनाईयां उत्पन्न नहीं हो जाती वरन् जिसे अवलोकन का विषय बनाया जा रहा है उसके अप्राकृतिक व्यवहार के कारण भी दोष तथा

कठिनाइयां उत्पन्न हो जाती है। मानव बुद्धिशील प्राणी है जिसका उपयोग मानव इस रूप में करता है कि वह सदैव अपने व्यवहार में बनावटीपूर्ण क्रियाएं करना चाहता है। इसी प्रकार के व्यवहार को अप्राकृतिक अथवा ढोंगपूर्ण व्यवहार कहते हैं।

■ **अधिक समय की आवश्यकता** – प्राकृतिक परिस्थितियों में अवलोकनका सबसे बड़ा दोष यह भी है कि अवलोकनकर्ता को व्यवहार का अध्ययन करने के लिए अधिक समय की आवश्यकता है। प्राकृतिक व्यवहार का अवलोकन अवलोकनकर्ता की इच्छा पर निर्भर नहीं करता है। उदाहरण के लिए प्राकृतिक परिस्थितियों में क्रोध का अध्ययन करने के लिए अवलोकनकर्ता को किसी बाहर के चौराहे पर महीनों प्रतीक्षा करनी पड़ेगी कि कब और किस समय दो राहगीरों में भिडन्त होने से किसी को क्रोध उत्पन्न हो और अवलोकनकर्ता उसका अध्ययन करें।

अभ्यास के लिए क्रियाकलाप 1.1

आसपास के किन्ही पाँच किशोरों का अवलोकन कर निम्न जानकारी एकत्रित करें—

स क्र	छात्र का नाम	कक्षा	भार	लम्बाई	पिछली कक्षा की उपलब्धि
1	सुरेश	7	37 किलोग्राम	5 फीट	55 %

अपनी प्रगति की जाँच करें

निर्देश: अ) अपने उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद दिए गए रिक्त स्थान में लिखें।

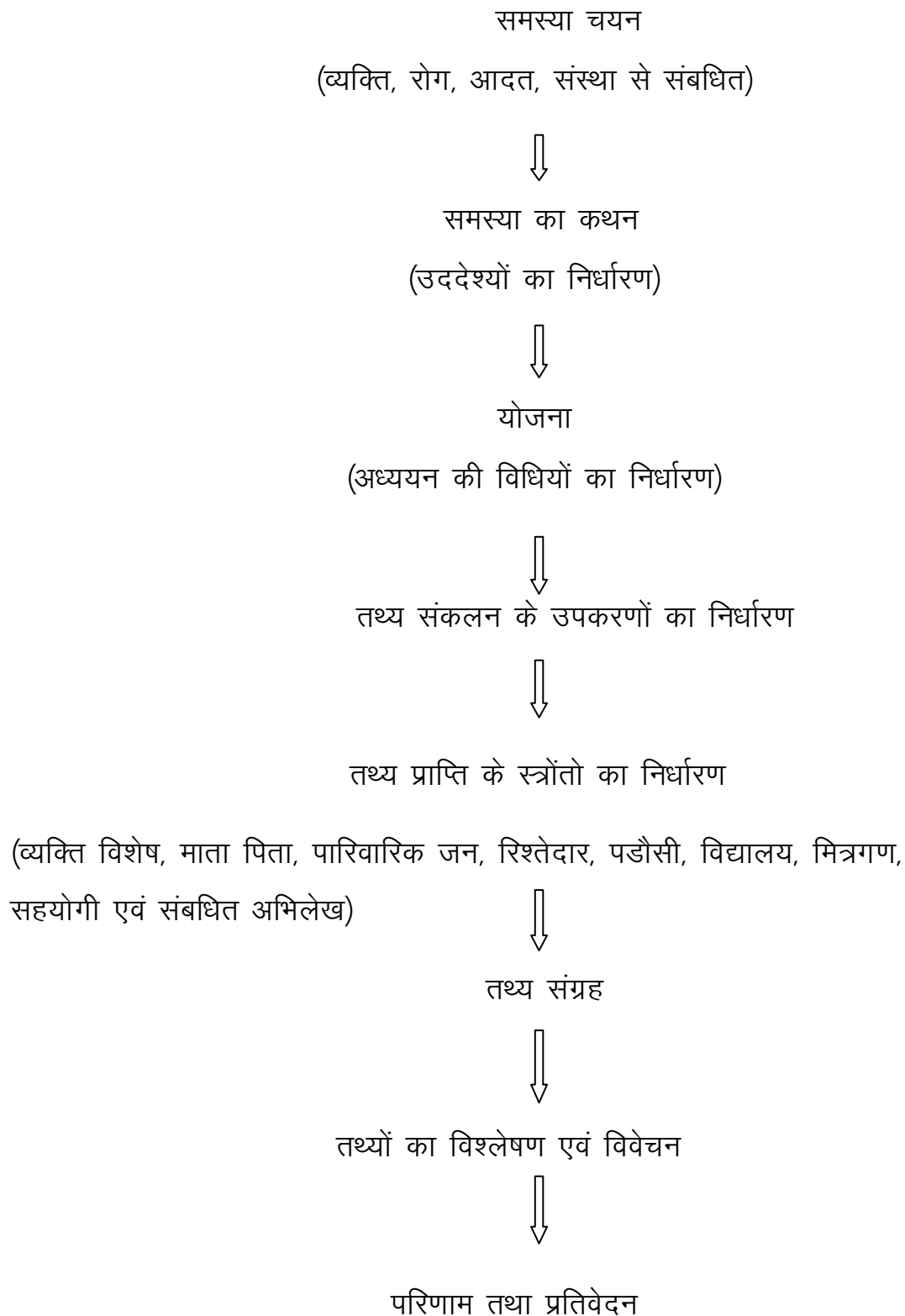
व) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

प्रश्न-1 अवलोकन विधि के प्रकार कौन से हैं ?

1.3.2 केस अध्ययन विधि

किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के संबंध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण विधि केस अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति में रोगात्मक लक्षणों को पहचान कर कारणों के ज्ञान के आधार पर निदान किया जाता है। अतः इसे नैदानिक विधि भी कहते हैं। इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी रोगी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसकी जीवन की सभी तरह की घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात किया जाता है। घटनाओं की जानकारी में प्रारम्भिक सूचनाएं, अतीत की घटनायें तथा वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती हैं तथा उनका विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किये जाते हैं। जानकारी में साक्षात्कार प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण तथा मापनी आदि का प्रयोग किया जाता है पर व्यक्ति का गहन अध्ययन, विकास का क्रम तथा जीवन की समस्याएं जानने की समुचित विधि है। इस विधि में अनेक स्रोतों जैसे व्यक्ति विशेष, उसके माता पिता, पारिवारिक जन, रिश्तेदार, पड़ोसी, विद्यालय, मित्रगणों, सहयोगियों एवं संबंधित अभिलेखों से सूचना एकत्रित कर किसी व्यक्ति, स्थिति, समूह अथवा संस्था के संबंध में अध्ययन किया जाता है।

केस अध्ययन विधि की प्रक्रिया के प्रमुख विन्दु



केस अध्ययन विधि के लाभ

- केस अध्ययन विधि के द्वारा गहन, सूक्ष्म तथा विस्तृत जानकारी प्राप्त हो जाती है।
- रोगी के रोग के स्वरूप, कारण आदि के समझने में सहायक है।
- उपचार के चयन हेतु महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- चारित्रिक विकृतियों, बालअपराधों व मनस्ताप आदि रोगों को समझने में सहायक है।

केस अध्ययन विधि के दोष

- इसमें प्राप्त जानकारी लोगों के स्मरण पर निर्भर करती है।
अतः त्रुटिपूर्ण हो सकती है।
- विस्मरण के कारण विश्वसनीयता कम होती है।
- अध्ययनकर्ता के आत्मगत तत्व प्रभाव डालते हैं।
- इसमें समय, श्रम तथा धन अधिक लगता है।

अभ्यास के लिए क्रियाकलाप 1.2

अपने निकट के किसी समस्यात्मक बालक की समस्या के प्रारम्भ से वर्तमान स्थिति तक निम्न बिन्दुओं की जानकारी एकत्र करें—

बालक का नाम	
अभिभावकों के नाम व शिक्षा	
भाई—बहनों की संख्या	
समस्या का विवरण	
समस्या के कारण	

समस्या समाधान के लिए किए गए उपाय	
समस्या समाधान के लिए आपके सुझाव	

अपनी प्रगति की जाँच करें

निर्देश: अ) अपने उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद दिए गए रिक्त स्थान में लिखें।

व) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

प्रश्न-2 केस अध्ययन विधि क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.3.3 साक्षात्कार विधि

छात्रों के व्यक्तित्व को मापने तथा उन्हें परामर्श देने के लिये साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया जाता है। परामर्श की तो यह अत्यधिक महत्वपूर्ण विधि है। इसके आधार पर साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के बारे में सभी सूचनाएं एवं तथ्य एकत्र किये जा सकते हैं तथा इनके आधार पर साक्षात्कारकर्ता किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकता है। इस प्रकार साक्षात्कार में दो व्यक्तियों का आमने-सामने का वार्तालाप होता है – साक्षात्कारकर्ता तथा साक्षात्कार देने वाला।

साक्षात्कार विधि का अर्थ एवं परिभाषा – साक्षात्कार एक आत्म-निष्ठ विधि है, जिसके द्वारा व्यक्ति की समस्याओं तथा गुणों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसमें दो व्यक्तियों में आमने सामने मौखिक वार्तालाप होता है, जिसके द्वारा व्यक्ति की समस्याओं का समाधान खोजने तथा शारीरिक और मानसिक दशाओं का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। साक्षात्कार की प्रमुख परिभाषाएं इस प्रकार हैं –

पी.वी. युंग के अनुसार – साक्षात्कार को एक क्रमबद्ध प्रणाली माना जा सकता है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति के आन्तरिक जीवन में अधिक अथवा कम काल्पनिकता से प्रवेश करता है, जो उसके लिये सामान्यतः तुलनात्मक रूप से अपरिचित है।

गुड एवं हैट के शब्दों में – किसी उद्देश्य से किया गया गम्भीर वार्तालाप ही साक्षात्कार है।

एम. के. कोचर के अनुसार – साक्षात्कार दो व्यक्तियों के आमने-सामने का मिलन होता है तथा वे किसी विषय के विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

जे.सी. अग्रवाल के शब्दों में – साक्षात्कार में दो व्यक्ति आमने सामने की स्थिति में होते हैं। इनमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को उसकी समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने में सहायता देता है।

साक्षात्कार विधि की विशेषताएं –

- साक्षात्कार में आमने सामने बैठकर किसी उद्देश्य को लेकर दो व्यक्तियों में वार्तालाप होता है।
- यह व्यक्ति से व्यक्ति का सम्बन्ध है।
- यह एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने का साधन है।
- साक्षात्कार में संलग्न दो व्यक्तियों में से एक को साक्षात्कार के उद्देश्य का ज्ञान रहता है।

- इसके प्रयोग से व्यक्ति के विषय में विभिन्न वांछित जानकारीयां संग्रहित की जाती हैं।

साक्षात्कार विधि का प्रयोग –

- राइटस्टोन एवं अन्य के मत में साक्षात्कार विधि द्वारा छात्रों के सम्बन्ध में सूचनाएं संग्रहीत की जाती हैं।
- इसके द्वारा नवीन व्यक्तियों का नौकरी के लिये चुनाव किया जाता है।
- छात्रों की प्रमुख समस्याओं से अवगत होकर उनका समाधान किया जाता है।
- छात्र के शारीरिक विकास, मुख्य दोषों तथा व्यावसायिक रुझानों के विषय में जानकारी प्राप्त की जाती है।
- इसके द्वारा छात्र के व्यवहार की जानकारी प्राप्त की जाती है।
- छात्रों की रुचियों, रुझानों तथा अध्ययन सम्बन्धी आदतों की जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलती है।
- इससे छात्रों को अपने परिवार, विद्यालय, साथियों आदि से समायोजन करने हेतु सहायता मिलती है।

साक्षात्कार विधि के प्रकार –

- **नैदानिक साक्षात्कार** – इस साक्षात्कार का उद्देश्य किसी गम्भीर सामाजिक घटना या समस्या के कारणों की खोज करना होता है इसमें व्यक्ति से इस ढंग से वार्तालाप किया जाता है कि उसको अपनी चिन्ताओं से मुक्ति मिले।

- **नियुक्ति साक्षात्कार** — इस साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य जीविका के लिये व्यक्ति की उपयुक्तता निश्चित करना होता है। इसमें जीविका से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं।
- **शोध साक्षात्कार** — इससे विभिन्न सामाजिक वि. यों एवं घटनाओं से सम्बन्धित कारणों की खोज करने का प्रयास किया जाता है।
- **परामर्श साक्षात्कार** — परामर्श प्रक्रिया में साक्षात्कार का विशेष ध्यान रखा जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति में सूझ उत्पन्न करना है, जिससे व्यक्ति को आत्म बोध करने में सहायता मिले।
- **तथ्य संकलन साक्षात्कार** — इसमें व्यक्ति या व्यक्तियों के समुदाय से मिलकर तथ्य संकलित किये जाते हैं।
- **सर्वेक्षण साक्षात्कार** — इस साक्षात्कार में एक व्यक्ति के स्थान पर अनेक व्यक्ति दिलचस्पी के पात्र होते हैं। सार्वजनिक जनमत संग्रह में इसी उद्देश्य से व्यक्तियों के साक्षात्कार किये जाते हैं।

साक्षात्कार विधि की प्रविधियाँ — साक्षात्कार के लिये प्रमुख रूप से दो प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है —

1. निर्देशात्मक प्रविधि — इसमें व्यक्ति से निर्देशक प्रश्न किये जाते हैं। प्रश्न करने के साथ-साथ साक्षात्कारकर्ता सूझाव भी देता जाता है।
2. अनिर्देशात्मक प्रविधि — यह व्यक्ति प्रधान प्रविधि है। इसमें समस्या की अपेक्षा साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति पर अधिक ध्यान दिया जाता है तथा उसे अपने दमित संवेगों तथा भावनाओं को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करने का अवसर दिया जाता है। इस विधि में प्रमुख बल इस बात पर दिया जाता है कि साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति में अन्तर्दृष्टि उत्पन्न हो अर्थात् वह स्वयं अपनी समस्याओं का हल खोज सके।

साक्षात्कार के पद

⇒ साक्षात्कार की तैयारियाँ

⇒ साक्षात्कारदाता से सम्पर्क स्थापित करना

⇒ सहयोग की प्रार्थना

⇒ प्रश्नों का पूछना

⇒ पुनः स्मरण करना

⇒ प्रोत्साहन देना

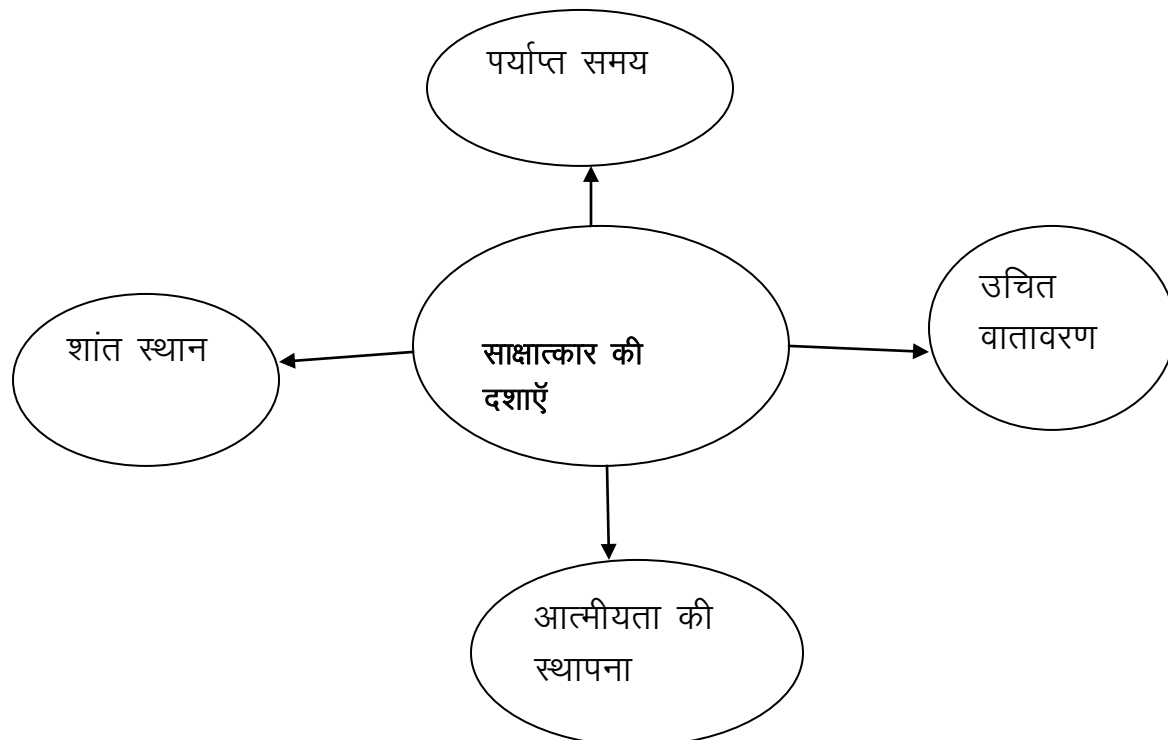
⇒ क्रोधित होने से बचना

⇒ उचित प्रश्न पूछना

⇒ सूचना को नोट करना

⇒ साक्षात्कार की समाप्ति

⇒ रिपोर्ट लिखना



साक्षात्कार करते समय सुझाव

- साक्षात्कार देने वाले के प्रति मित्रता और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार किया जाये।
- साक्षात्कार देने वाले का विश्वास अवश्य प्राप्त किया जाये। साक्षात्कारकर्ता को चाहिये कि वह साक्षात्कार देने वाले में यह विश्वास उत्पन्न करे कि उसकी समस्या का समाधान अवश्य होगा।
- तनाव को दूर करने के लिये हास्य का भी प्रयोग करना चाहिये।
- साक्षात्कार लेते समय इस बात का प्रयत्न किया जाये कि साक्षात्कार देने वाला आराम का अनुभव करे।
- साक्षात्कार देने वाले की भावनाओं को चोट नहीं पहुंचाई जाये।
- साक्षात्कार देने वालों की बातों को धैर्यपूर्वक सूना जाये। चाहे वह इधर उधर की बातें क्यों न करे।
- साक्षात्कारकर्ता को व्यक्ति की किसी बात का विरोध या आलोचना नहीं करना चाहिये।
- साक्षात्कारकर्ता को साक्षात्कार की अवधि में क्रोध नहीं करना चाहिये।
- साक्षात्कार देने वाले का यथासम्भव आदर किया जाये उसमें हीनता की भावनाओं का समावेश नहीं किया जाये।
- साक्षात्कारकर्ता को अपना सम्पूर्ण ध्यान व्यक्ति की समस्या पर केन्द्रित करना चाहिये। व्यर्थ की बातों में अपने को नहीं उलझाना चाहिये।
- साक्षात्कारकर्ता को उप निदेशक नहीं बनना चाहिये।
- साक्षात्कार देने वाले को अपनी समस्या को हल करने के लिये प्रेरित किया जाये।

साक्षात्कार विधि की उपयोगिता –

- साक्षात्कार द्वारा अमूर्त घटना का अध्ययन किया जा सकता है
- इसके द्वारा सभी प्रकार की सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है।
- साक्षात्कार द्वारा छात्रों की आन्तरिक भावनाओं को स्पष्ट किया जा सकता है, जो किसी अन्य पद्धति द्वारा सम्भव नहीं।
- साक्षात्कारकर्ता प्रश्नों की सहायता से किसी छात्र से सम्बन्धित पूर्व घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार इस विधि द्वारा भूतकालीन घटनाओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह एक महत्वपूर्ण विधि है क्योंकि इसमें सूचनादाता, साक्षात्कारकर्ता के सम्मुख रहता है, जो उसके मनोभावों को सुगमता से समझ लेता है।
- इसमें सूचना का सत्यापन सम्भव होता है।
- साक्षात्कार द्वारा व्यक्ति अपने विषय में सर्वोत्तम ढंग से जानकारी प्राप्त कर लेता है।
- इसके द्वारा छात्र की अन्तर्दृष्टि को विकसित किया जा सकता है
- यह विधि सरल होने के कारण उपयोगी भी है
- सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझने की यह सर्वोत्तम विधि है।
- इसके द्वारा छात्र की रुचियों रुझानों आदतों तथा दृष्टिकोण का ज्ञान प्राप्त करने में उनमें वांछित परिवर्तन किये जा सकते हैं।
- यह व्यक्ति के समस्त गुणों एवं अवगुणों का सम्पूर्ण चित्र उपस्थित करता है।
- साक्षात्कार विधि का प्रयोग निरक्षर व्यक्ति के लिये भी प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है।

अभ्यास के लिए क्रियाकलाप 1.3

अपने निकट के किसी दृष्टिहीन बालक की अधिगम समस्याओं को जानने के लिए साक्षात्कार की प्रश्नावली तैयार करो।

अपनी प्रगति की जाँच करें

निर्देश: अ) अपने उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद दिए गए रिक्त स्थान में लिखें।

व) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

प्रश्न— 3 साक्षात्कार विधि की उपयोगिता क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 किशोरों द्वारा आत्मनिरीक्षण

आत्मनिरीक्षण का अर्थ है स्वयं के विचारों व भावनाओं का निरीक्षण करना। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ बुराईयाँ अवश्य होती हैं यदि व्यक्ति अपनी इन बुराईयों की ओर ध्यान न दे तो ये बुराईयाँ बढ़ती चली जाती है और ये बुराईयाँ आदतें बन जाती हैं। प्रत्येक मनुष्य के चरित्र, व्यवहार, स्वभाव, विचार व जीवनयापन दृष्टिकोण आदि में कुछ न कुछ कमी रह जाना स्वाभाविक है।

जिस प्रकार एक हल्के से धब्बे से किसी भी चित्र की सुन्दरता नष्ट हो जाती है। उसी प्रकार किसी भी दोष से दूषित मनुष्य का जीवन दुष्कर हो जाता है। मनुष्य को अपने जीवन का सूक्ष्म रूप में निरीक्षण करते रहना चाहिए। मनुष्य अपनी असफलताओं का कारण हमेशा दूसरों को बताता है। किन्तु आत्मनिरीक्षण पर ज्ञात होता है, कि असफलताओं का कारण मनुष्य की स्वयं की कमजोरी होती है। जब आत्मनिरीक्षण द्वारा अपनी बुराईयों, दोष, विकार समझ आ जाएं तो उन्हें विवेक, बुद्धि, आत्मबल से दूर करने के लिए उसी प्रकार प्रयत्न करना चाहिए जैसे एक डॉक्टर रोगी के दोषी तत्वों को बाहर निकाल देता है।

अभ्यास के लिए क्रियाकलाप 1.4

स्वयं का आत्मनिरीक्षण करो और अपनी अच्छाईयों व बुराईयों को लिखो साथ ही उन बुराईयों को दूर करने के लिए आपको द्वारा किए जाने वाले प्रयासों को भी बताओ।

1.5 सारांश

प्रत्येक प्राणी अपने जन्म से ही विशेष शक्तियों को लेकर जन्म लेता है। ये विशेषताएं उसको माँ एवं पिता के पूर्वजों से हस्तांतरित की गयी होती हैं। इसी के साथ ही पर्यावरण की विशेषताएं छात्र के विकास पर अपना प्रभाव डालती हैं। पर्यावरण छात्रों को सुडोल और सामान्य बनाने में मदद देते हैं, अतः यह स्पष्ट है, कि सभी छात्र एक दूसरे से भिन्न होते हैं। जब दो बच्चे विभिन्न समानताएं रखते हुए भी आपस में भिन्न व्यवहार करते हैं तो इसे वैयक्तिक भिन्नता कहा जाता है। व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर छात्रों को शिक्षा देने की विधियाँ भी अलग अलग होती हैं। व्यक्तिगत भिन्नताओं

को मापने की अनेक विधियाँ हैं जैसे अवलोकन, साक्षात्कार आदि। मनुष्य को स्वयं अपने जीवन का सूक्ष्म रूप में निरीक्षण करते रहना चाहिए। मनुष्य अपनी असफलताओं का कारण हमेशा दूसरों को बताता है। किन्तु आत्मनिरीक्षण पर ज्ञात होता है, कि असफलताओं का कारण मनुष्य की स्वयं की कमजोरी होती है।

1.6 चिंतन के लिए प्रश्न

- व्यक्तिगत भिन्नता के अध्ययन की आवश्यकता क्यों है?
- साक्षात्कार में किन किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
- केस अध्ययन विधि में तथ्यों का संकलन कहाँ-कहाँ से किया जा सकता है ?
- आत्मनिरीक्षण क्यों आवश्यक है ?

1.7 प्रगति की जांच के लिए उत्तर

1. अवलोकन दो प्रकार का होता है अ. सरल तथा अनियन्त्रित अवलोकन विधि – जब किसी घटना का अवलोकन प्राकृतिक परिस्थितियों में किया जाये और उन परिस्थितियों पर कोई दबाव न डाला जाय तो ऐसे अवलोकन को सरल तथा अनियन्त्रित अवलोकन कहते हैं। व. व्यवस्थित अथवा नियन्त्रित अवलोकन विधि – जब अवलोकनकर्ता स्वयं तथा घटना दोनों पर नियन्त्रण करके अध्ययन करें तो इस प्रकार का अवलोकन व्यवस्थित अथवा नियन्त्रित अवलोकन कहा जा सकता है।

2. किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के संबंध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण विधि केस अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी रोगी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसकी जीवन की सभी तरह की घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात किया जाता है। घटनाओं की जानकारी में प्रारम्भिक सूचनाएं, अतीत की घटनायें तथा वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती हैं तथा उनका विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किये जाते हैं।

3.

- साक्षात्कार द्वारा अमूर्त घटना का अध्ययन किया जा सकता है
- इसके द्वारा सभी प्रकार की सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है।
- साक्षात्कार द्वारा छात्रों की आन्तरिक भावनाओं को स्पष्ट किया जा सकता है, जो किसी अन्य पद्धति द्वारा सम्भव नहीं।
- इसमें सूचना का सत्यापन सम्भव होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

मिश्रा महेन्द्र कुमार (2009), असामान्य मनोविज्ञान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

शर्मा आर. के. (2015), सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम, राधा प्रकाशन मन्दिर

भार्गव महेश (2008), शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, सूर्या प्रकाशन